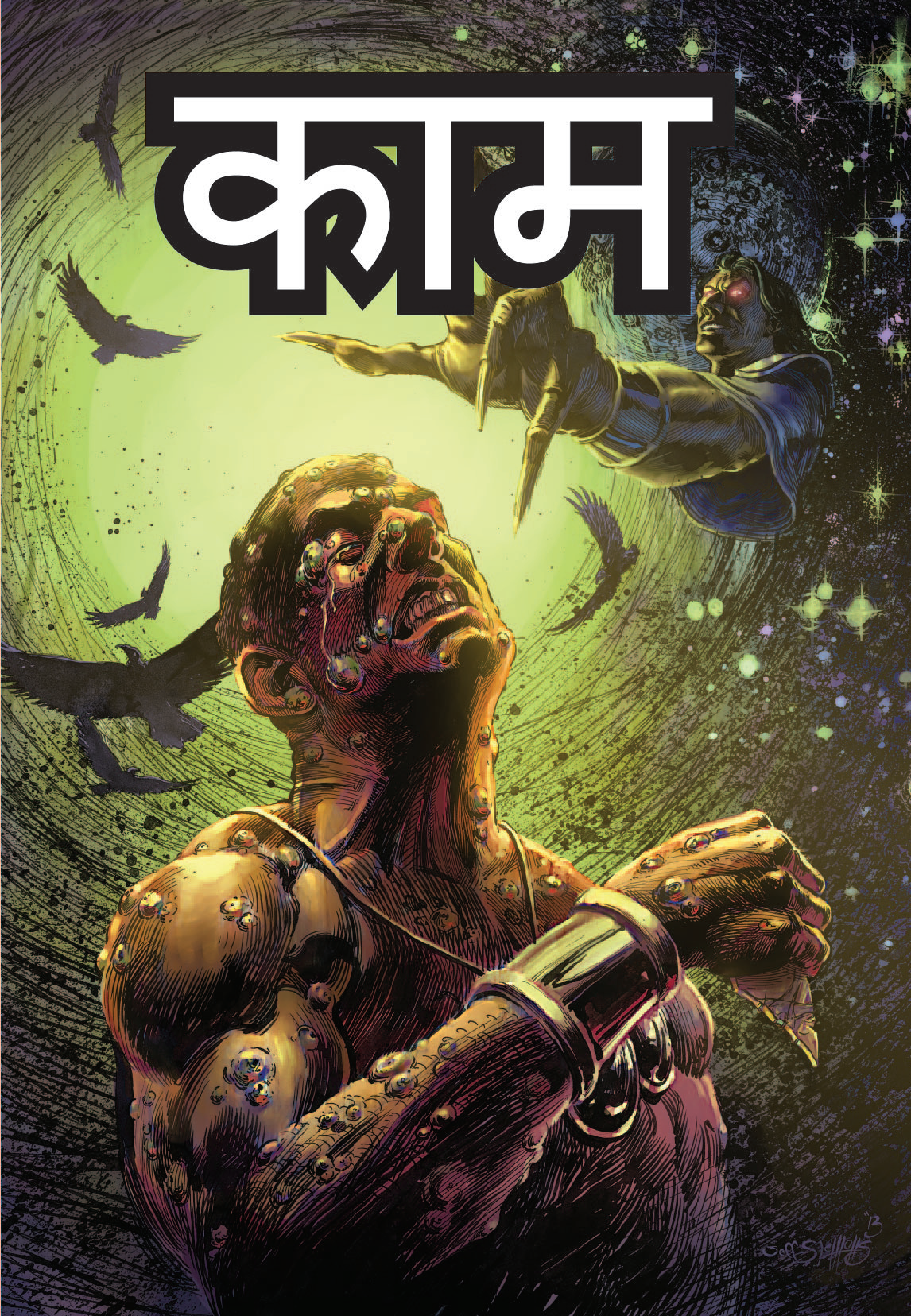
काल

ऊज़ का प्रदेश
अय्यूब और उसके घराने का गृह स्थान।
अय्यूब सात पुत्रों और तीन पुत्रियों का पिता जिसका पूर्व के देशों में बड़ा नाम था क्योंकि अय्यूब सिर्फ धनी व्यक्ति ही नहीं --
बल्कि परमेश्वर, अपने परिवार, अपने मित्र और कुटुम्बियों के प्रति समर्पित व्यक्ति था।
मैं अपना प्याला, अपने मेज़बान के लिए उठाता हूँ!
अय्यूब! जिसके जैसा होने की मैं अभिलाषा करता हूँ, और ऐसा इन्सान जिसके सामान होने की अभिलाषा करता हूँ, और एक ऐसा इन्सान जिसके सामान होने की आकांक्षा मेरे बच्चे भी करते हैं!
एलीपेज, मेरे पुराने मित्र! तुम भी बहुत दयालु हो!
मैं और दयालु? जरा इस शानदार दावत को तो देखो जो तुमने हमारे सम्मान में दी है!
तुम तो मेरे दोस्त हो!
उससे भी कहीं अधिक तुम मेरे परिवार जैसे हो!
उसके प्रिय मित्र सभी क्षेत्रों से आते रहते हैं...

अय्यूब 1:1-1:3

अय्यूब, अपने परिवार से तुमसे ज्यादा प्रेम और कोई नहीं कर सकता !
- परिवार - जैसा उसने कहा ! वैसा मैं हो गया !
एलीपज, एक तेमानी मनुष्य जो तेमान नामक स्थान का निवासी था। यह स्थान अपने ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था।
हाँ, अपने परिवार से प्रेम रखने वाला व्यक्ति, किन्तु साथ ही ज्ञान से प्रीति रखने वाला व्यक्ति भी!
शूही निवासी, बिलदद। शूह का वंशज, अब्राहम का एक पुत्र, पूर्वी देश के अरबी मरुस्थल के निवासी का वंशज !
अय्यूब ! मैं नहीं जानता की इतनी धन-संपत्ति और अच्छे घराने के लिए तुमने क्या-क्या किया होगा --
-- मुझे भी बताओ ताकि मैं भी ऐसा ही करूँ !
नामाती सोपर, सीमांत प्रदेश के नमिला नगर का निवासी।
अय्यूब, जो एक उदार, विश्वासयोग्य, और परमेश्वर से डरने वाला है !
यह तो भला हुआ कि अय्यूब एक विनम्र इन्सान है , वरना यह सारी प्रशंसा बड़ाई उसके सर पर चढ़ जाती !
एलिहू बूजी वासी और अय्यूब के धनिष्ठ मित्रों में सब से युवा। उसके नाम का अर्थ है - वह मेरा परमेश्वर हैं -

अय्यूब 1:1-1:3

पिताजी ?
उमर ने एक और दावत का इंतजाम किया है, मैं उसमें शामिल होने के लिए अभी निकल रहा हूँ।
मुझे बड़ी खुशी है कि मेरे बच्चे एक दूसरे की संगती का आनन्द उठाते है !
क्या अभी जा रहे हो ?
याद रहे कि हर काम सम्मान के साथ किया जाए, अपने भाई, बहनों को भी यह बात याद दिलाना --
जी पिताजी, ऐसा ही होगा !
मैंने शेत को निर्देश दिया है कि वह तुम्हें ले जाए, वह वहाँ रूका रहेगा और फिर सुबह तुम्हें घर वापस ले आएगा।
सभी को हमारा प्यार देना !
पिताजी आप जो किया करते है हम उसकी सराहना करते हैं-विशेषकर होमबलियों के लिए-और हम कभी ऐसा कोई काम नहीं करेगें जिससे आपकी या परमेश्वर की प्रतिष्ठा को ठोस पहुँचे ! ये मेरा वादा हैं !

अय्यूब 1:4

बलिदान ?
अय्यूब, बलिदान अपने बच्चों के लिए चढ़ाता है, कि अगर भूले से उनसे कोई गलती हो तो उसके लिए यह हो।
परमेश्वर चाहता है कि हम अपने पापों का मूल्य चुकाएँ। हम अशुद्ध, अपवित्र हैं
मैं उनसे प्यार करता हूँ, इसलिए मैं उनकी तरफ से परमेश्वर से बिनती करता हूँ।
तुम ऐसा कब करते हो ?
मेरे बच्चे रात को भोज के दौरान आनन्द मानते है, इसलिए मैं सुबह होने तक मैं ऐसा करता हूँ।
पर चिन्ता मत करो, इसका हमारे अपने भोज पर इसका कोई असर नहीं होगा !
आह, यही तो मैं सुनना चाहता था !
अगर कोई ऐसा जन हो जो दूसरे के पापों के लिए बलिदान चढ़ाता हो तो वे केवल तुम्हीं हो, अय्यूब।
नहीं एलीहू, किसी इन्सान को इस आधार पर मत तौलो -
-- मैं तुम लोगों से महान नहीं हूँ।
और परमेश्वर की पवित्रता के सामने तो हम सभी पापी और अशुद्ध हैं ...
अच्छा चलो, खाना ठण्डा हो रहा हैं आओ खाना खाते है !

अय्यूब 1:4-5

अगले दिन सुबह तड़के।
अय्यूब ने अपने कहने के अनुसार ही किया।
जैसा कि वह हमेशा करता था।
हे मेरे परमेश्वर, मैं अपने बच्चों की तरफ से तेरे पास आता हूँ।
आपने मुझे उनसे आशीषित किया हैं --
अगर उन्होंने कोई गलती की है तो उन्हें क्षमा करें, और यह होमबलि स्वीकार किजिए!
अय्यूब यह जनता था कि परमेश्वर उसके काम को देखता हैं।
लेकिन वह यह नहीं जानता था कि--कोई और भी है --जो उसके कामों को देख रहा है।

अय्यूब 1:5

स्वर्ग में परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए।
और उनके बीच -- वो अनदेखा अवलोकनकर्ता -- भी परमेश्वर के सामने उपस्थित हुआ।
वो जिसे गिर दिया गया था।
गिराए हुओ में सबसे पहला।
शैतान ...

तू कहाँ से आता है ?
मैं पृथ्वी के लोगो के बीच से आ रहा हूँ...
इधर-उधर घूमता-फिरता और उन जानवरों को देखता आ रहा हूँ जिन्हें तू बहुत प्यार करता है।
हाँ, उनके पास से।
अय्यूब 1:6-7

क्या तूने मेरे दास अय्यूब को देखा है ?
हाँ मैंने देखा।
पृथ्वी पर उसके तुल्य और कोई नहीं हैं। वह मेरा भय मनता है। वो बुराई से दूर रहने वाला, धर्मी जन है।
हाँ! लेकिन वह तुम्हारा भय क्यों न मानें ?
तूने उसे आशीष दी हैं! उसकी रक्षा करता हैं!
उसके पास अद्‌भुत सुन्दर घर है, अनगिनत पशु हैं, भरपूर स्वस्थ और सुखी परिवार हैं!
लेकिन ...
अगर सारी आशीषों को उससे छीन लिया जाए तो वह तेरी निन्दा अवश्य करेगा।
मुझे उसकी सारी आशीषों छीन लेने दो। तब देखना।
उसके पास जो कुछ भी है मैं तुझे छीन लेने की अनुमति देता हूँ, पर उसके शरीर को मत छूना।
मैं उसके शरीर को नहीं छूऊँगा...
तब शैतान परमेश्वर की उपस्थिति से चला गया।

अय्यूब 1:13-1:12

अय्यूब के खेतों में।
चलो-चलो ...
वो क्या हैं ?
मारो मारो
भागो !!!

उन पहाड़ों पर, जहाँ अय्यूब की ज़मीन थी,
और जहाँ उसके भेड़-बकरियाँ चरा करती थीं।
यह कैसी गंध हैं ?
सारे के सारे !
भागो !
वहाँ एक ...

अय्यूब 1:16

अय्यूब के ऊँटो का काफ़िला।
क्या तुमने कुछ सुना ?
ये आवाज़ वहाँ ऊधर से आ रही है, लेकिन ये हैं क्या ?
कसदी लोग !
ये तो लुटेरे हैं !
वे लोग चारों तरफ़ हैं !
हमें घेर लिया हैं !

अय्यूब 1:17

अय्यूब के ज्येष्ठ पुत्र, ओमर का घर !
तुम्हें अच्छी नींद आई होगी, कोल ?
हाँ, पर मैं इसके लिए शुक्रिया नहीं कहूँगा, दविनिया !
मेरे सोने जाने के बाद जेत कब तक बाँसुरी बजाता रहा ?
बहुत देर तक कोल, बहुत देर तक!
चलो खाने के लिए कुछ लाते हैं ?
मेरे पति अब तक सो रहे थे, लेकिन उठते ही उन्हें भूख लगती हैं !
बहुत सारा खाना बचा हुआ हैं ! ओमर और बाकि और भी जाग रहे हैं !
तुम्हें कुछ सुनाई दिया ?
मैंने ये कभी नहीं देखा...
ये...ये... सीधा हम पर गिर रहा है !!!
चलो यहाँ से जल्दी निकालो !
अब हम कहाँ जाए ?

अय्यूब 1:19

हमारे साथ भोज में शामिल होने के लिए धन्यवाद !
जल्द ही फिर मिलेंगे !
अय्यूब, आज सुबह मैंने तुम्हें, बलिदान चढ़ाते हुए देखा।
परमेश्वर के प्रति तुम्हारा समर्पण किसी भी तरह दूसरे स्थान पर नहीं।
यह एक ऐसा उदाहरण हैं जो मेरे दिल पर अपनी छाप छोड़ गया हैं।
धन्यवाद, एलिहू।
इस उदाहरण ने, मेरे दिल को भी छू लिया हैं।
झूठी तारिफ ? बिलकुल नहीं !
प्रिय, क्यों झूठी तारिफ कर रही हो ?
अब, क्या मुझे वो सोने की धातु मिलेगी जिसे उस नगर वो सुनार बेच रहा है ?
हाँ... पर थोड़ी और तारीफ करने के बाद !
मालिक ! मालिक !

अय्यूब 1:14

एबेद,
क्या हुआ तुम्हें ?
मालिक... केवल मैं ही बचकर आ सका...
कुछ लोगों ने... अचानक हमला कर दिया - सबको मार डाला और सब कुछ लूट कर ले गए !
हन्नाम, क्या तुम पर भी हमला हुआ हैं ?
नहीं... आसमान से भीषण आग बरसी !
और उस आग ने खेतों, भेड़-बकरियों और चरवाहों समेत सभी को जला दिया, केवल मैं बचा हूँ !
यह नहीं हो सकता !
तरुम ? मेहरबानी करके ये बताओ, क्या तुम कोई अच्छी खबर लाए हो !
हम पर कसदियों ने हमला किया !
उन्होंने हमें घेर लिया और सब को मार डाला और सारे ऊँट ले गए हो !
मालिक बहुत भयानक बात हो गई !
मैं जानता हूँ ! मैंने सुन लिया हैं !
दास-दासी मारे गए, पशु मर या लूट लिए गए ! यह अत्यन्त भयानक है !
नहीं, मालिक ! उससे भी कहीं अधिक बुरा !
अधिक बुरा ? इससे अधिक बुरा और क्या होगा शेत ?

अय्यूब 1:14-1:17

तेरे बेटे और बेटियाँ, तेरे सब से बड़े पुत्र के यहाँ आनन्द मना रहे थे...
मैं जानता हूँ, बताओ क्या कहना चाहते हो ?
मालिक,एक घातक हवा चली... उसने घर को ध्वस्त कर दिया...
हम ने ध्वस्त घर के मलबे में खोज की और सब लोग मिल गए, किन्तु वे सभी... वे सभी...
नहीं । नहीं... नहीं...नहीं... नहीं...
नहीं,!!! ये नहीं हो सकता नहीं !!! नहीं !!!
मेरे बच्चे... मेरे बच्चे...

अय्यूब 1:18-19

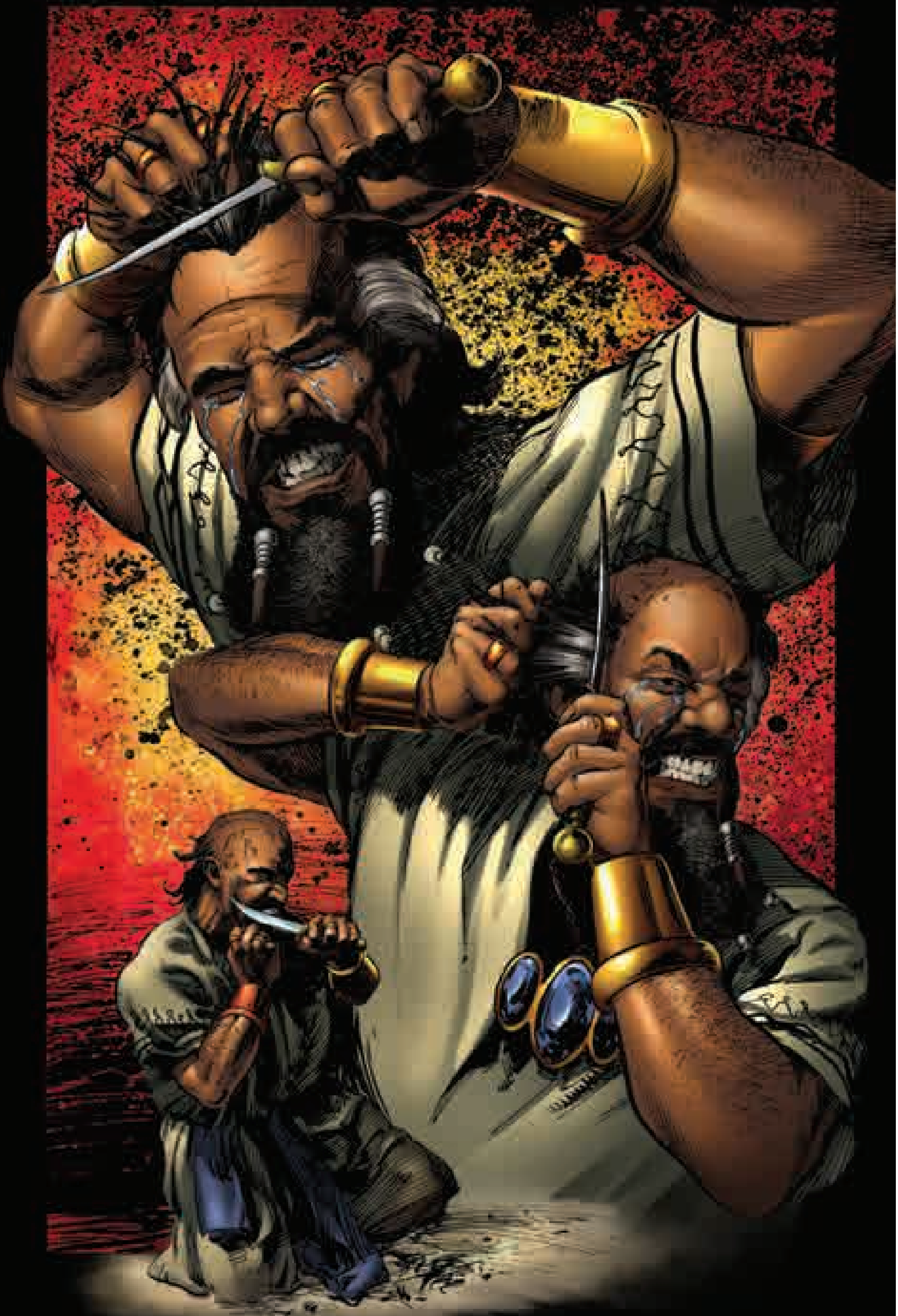

अय्यूब 1:20

नहीं!
नहीं! नहीं !
अय्यूब 1:20

कुछ दिनों के बाद ...

मैं अपनी माता के पेट से नंगा निकला !
और नंगा ही भूमि की क़ब्र में वापस लौट जाऊँगा ! परमेश्वर ने मुझे बहुत दिया !
और अब, उसने वह सब वापस ले लिया है !!! परमेश्वर तेरा नाम धन्य है !
मैं नहीं जानता कि तूने क्यों ऐसा होने दिया !
अब जो मैं कर सकता हूँ वो यह है कि तुझसे सामर्थ्य और शान्ति पाने की याचना करूँ...
बन्द कर दो इसे !

अय्यूब 2:21-1:22

फिर एक बार ऐसा हुआ कि परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए।
और फिर, वह गिराये हुए में पहिलौठा, उनके बीच परमेश्वर के सामने उपस्थित हुआ।
मैंने तुझे कहा था, मेरे दास अय्यूब के तुल्य कोई जन नहीं।
तूने उसे मेरे विरुद्ध बलवा करने को उभारने की कोशिश की, लेकिन वह निष्कलंक बना रहा।
निःसन्देह, पर सिर्फ एक कारण के लिए!
मुझे उसे छूने की अनुमति नहीं दी गई थी।
उसके प्राण का क्या? मनुष्य अपने प्राण के बदले अपना सब कुछ दे देता है!
मुझे अपना हाथ बढ़कर उसकी हड्डियों और शरीर को छूने दे, तब वह तेरी निन्दा करेगा!
मैं इसकी भी अनुमति देता हूँ।
तू क्या सोचता है कि तू उसका परिणाम जानता है।
पर मैं जानता हूँ, उसके परिणाम के आस-पास भी तू नहीं।
वह तेरे हाथों में हैं
उसके प्राण की हानि होने तक जो तेरी मर्जी हैं, वह कर।
वास्तव में - अब होगा असर।

अय्यूब 2:1-2:6

अय्यूब, क्या कर रहे हो ?
चलो वापस सो जाओ !
मेरी चमड़ी में खुजली हो रही हैं... इस तरह मैंने कभी महसूस नहीं किया...
ओह... दर्द
अय्यूब ? क्या हो गया ?
अय्यूब ?
औह... नहीं...

मुझे सारे... शरीर में दर्द हो रहा है...
मेरी खाल... मेरा पेट... मेरा सिर... साँस...
अपने आपको देखो !!!
क्या तो अभी भी यह कहेगा, परमेश्वर का नाम धन्य हैं ?
आह !!!
ओह !!!
खड़.
ऐसा... कहना...बन्द करो...
अय्यूब ! परमेश्वर की निन्दा कर !

अय्यूब 2:6-2:9

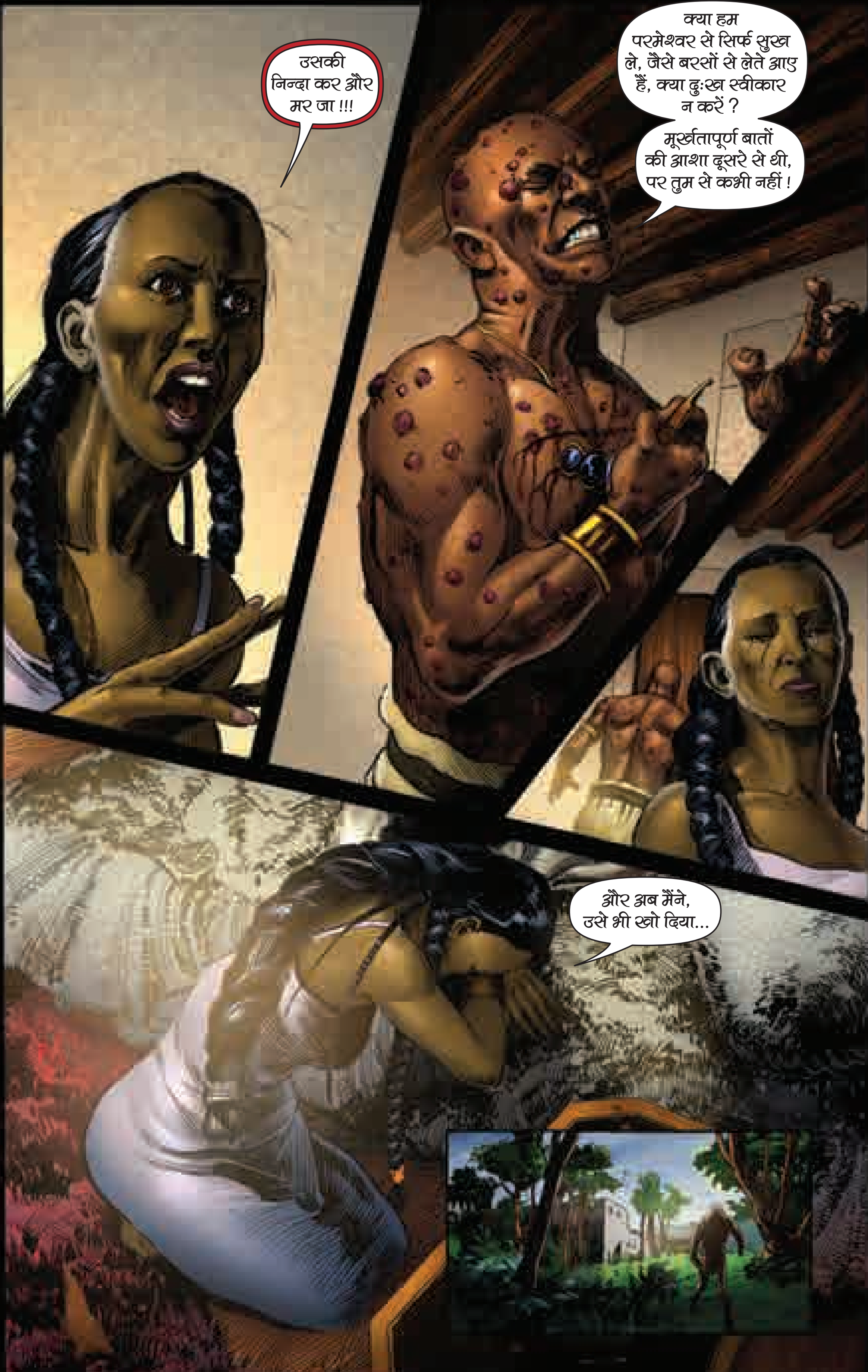
उसकी
निन्दा कर और
मर जा !!!
क्या हम
परमेश्वर से सिर्फ सुख
ले, जैसे बरसों से लेते आए
हैं, क्या दुःख स्वीकार
न करें ?
मूर्खतापूर्ण बातों
की आशा दूसरे से थी,
पर तुम से कभी नहीं !
और अब मैंने,
उसे भी खो दिया...

अय्यूब 2:9-2:10

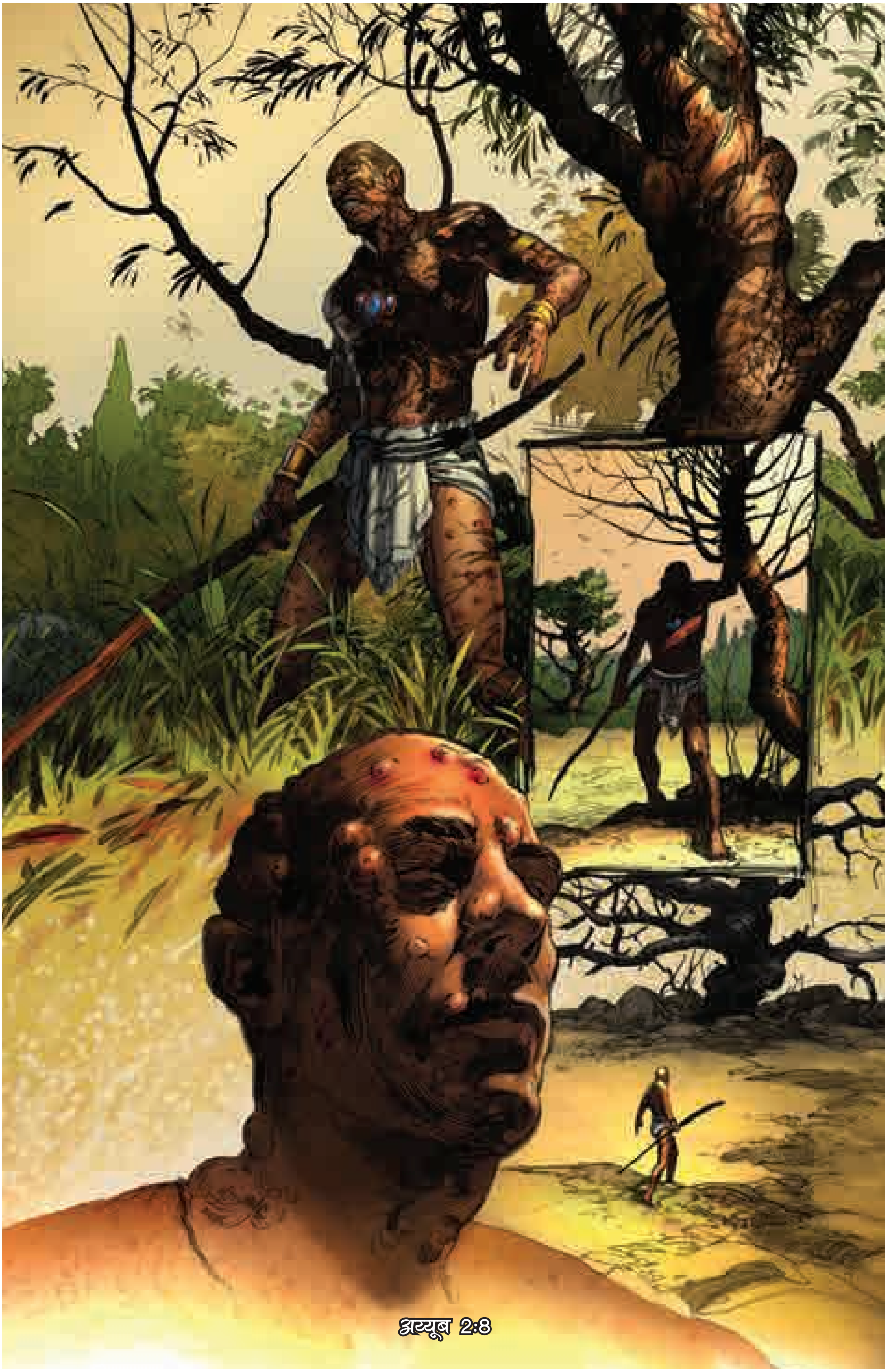

अय्यूब 2:8

अय्यूब 2:8

वो रहा वहाँ !!!
वहाँ !!!
क्या तुम्हें पक्का पता है वह है... वो मामूली मनुष्य है !
अय्यूब हमने जैसे ही सुना आ गये !
तुमने अपना सब कुछ खो दिया, अपने बच्चे भी !
अब यह !!!
ओह अय्यूब, मुझे बहुत दुःख हुआ !!!
हम तेरे साथ शोक मनाएँगे, जैसी कि परम्परा भी है।
धन्यवाद... मेरे मित्रों...

अय्यूब 2:11-2:12

उसके मित्र उसके साथ सात दिन तक खामोशी से साथ बैठे रहे --
-- और सात रात
पूरी होने पर ...
शापित हो वह दिन जब मैं पैदा हुआ !!!

अय्यूब 2:11-3:1

अय्यूब 3-4:11, 6:11

बुराई और विपत्ति !!!
तूने ऐसा कुछ किया है जिसका दण्ड तुझे मिल रह हैं !
एक रात निन्द में, मैंने यह सपना देखा...
एक आत्मा, मेरे सामने आ खड़ी हुई, और मुझसे कहा :
क्या मनुष्य परमेश्वर के सामने धर्मी हो सकते हैं ?
क्या मनुष्य अपने सृजनहार से अधिक पवित्र हो सकता हैं ?
अगर स्वर्गदूत भी गिरा दिये जाता है, तो मनुष्य क्या है जो मिट्टी में मिल जाता है और जिस की देह किड़े के समान पिस जाती हैं !
अब मेरी राय हैं, अय्यूब, जो मेरे बरसों के अनुभव और समझ बूझ पर आधारित हैं ।
परमेश्वर को खोजो !
और खुश रहो, कि परमेश्वर ने खुद तुझे सही करने को चुना हैं !
इन बातों के लिए ? खुश रहूँ ?
यह सब उसने तेरे भले के लिए किया ! बही घायल करता और उस पर पट्टी बाँधता हैं !
अपने घोर पापों से पश्चाताप कर और फिर तू सम्पूर्ण हो जाएगा !
एलिपज, मैं भी कुछ कहना चाहता हूँ ?

अय्यूब 4:12-5:27

मेरे बच्चे मृत पड़े है और मेरा शरीर रोग से गल रहा है !
किन्तु मैंने कभी परमेश्वर पर संदेह और उसके वचनों को अस्वीकार नहीं किया !
मुझे बताओ, मैंने क्या गलती की हैं जिसकी सजा मुझे मिल रही हैं !
क्या बता सकते हो मुझे ?
मेरी आँखों में देखो एलिपज !
देखो कि जब मैं खुद को निर्दोष कहता हूँ तो क्या मैं झूठ बोलता हूँ !
हे परमेश्वर ! मेरा माँस, लहू, धूल, कीड़ों और मवाद से भरा हुआ !
मैं पीड़ा और दर्द से कराह उठा हूँ, तू मेरी आत्मा की कड़वाहट पर दृष्टि कर !
मैंने पाप किया है जैसा की एलिपज कहता हैं ? तो मुझे बता !
तू जानता है, जितनी जल्दी मुझ पर मेरे पाप उजागर होंगे, मैं उनसे पश्चाताप करूँगा !
अभी तो, मैं भूमि पर लेटना और अपनी देह को धूल मैं मिला देना चाहता हूँ...
अय्यूब ?

अय्यूब 6-7

तेरे वचन उड़ा देने वाली आँधी के समान हैं!
परमेश्वर न्याय नहीं बिगाड़ता!
यदि तू वास्तव में निर्दोष है तो वह अभी तुझे उत्तर देगा!
हमारे बाप-दादा और उनके ज्ञान... और हमारे पूर्वजों की राय पर विचार कर!
इस पृथ्वी पर हमारे दिन थोड़े ही हैं, हमें अपने पूर्वजों की बुद्धिमानी से सीखना अवश्य है।
पानी के बिना एक पौधे को सोचो। वैसे ही वह मनुष्य है जिसने परमेश्वर को छोड़ दिया है!
सूखी फसल और खरपतवार को उखाड़ने में किसान दूसरी बार नहीं सोचता --
...वह उसे उखाड़ डालता है!
परमेश्वर निर्दोष को नहीं छोड़ता!
और न ही वह बुराई करने वाले को ऊँचा उठाता है!
पश्चाताप कर अय्यूब, और परमेश्वर तेरे चेहरे को हँसी से भर देगा!

बिलदद, यदि मैं सबसे शुद्ध पवित्र मनुष्य होता, तो भी मैं परमेश्वर से उसकी दया की याचना करता !
परम पवित्र के सम्मुख उपस्थित होने के लिए, मुझे एक पवित्र मध्यस्थ की आवश्यकता हैं जो मेरी और से बोलो !
पर कौन ? कोई नहीं !
परमेश्वर तूने अपने हाथो से मुझे रचा हैं , तो मुझे क्यों नष्ट करता हैं ?
जिस दिन मैं पैदा हुआ मेरी आँखों को दिन का प्रकाश क्यों दिखाया।
क्यों इस अन्धकार को मेरे जीवन में आने दिया, अगर मैं इस अन्धकार में ही अपना जीवन बिताता ?
बातें ! बातें ! बातें !
बातों से क्षमा नहीं मिलती और न ही छुटकारा मिल सकता हैं !
तू कहता है कि तू निर्दोष है, पवित्र हैं -- पर कहने से ही ऐसा नहीं हो जाता !
मैं जो कह रह हूँ वो ऐसा नहीं !
परमेश्वर कपटी मनुष्य को पहचानता है, अय्यूब ! वह दुष्ट जन पर ध्यान नहीं देता !
और जैसे एक घोड़ा मनुष्य नहीं बन सकता ! वैसे ही मुर्ख मनुष्य बुद्धिमान नहीं बन सकता।
तू एक उसके समान है, अय्यूब ?
जो दुष्ट ?झूठ बोलने वाला? या एक मूर्ख मनुष्य है ?

अय्यूब 9-11:12

अय्यूब 11:12-13:19

अय्यूब 13:20-17:16

तू क्या समझता है, हम मूर्ख या कुछ और हैं?
हमारी आँखें हैं! और हमने प्रमाण देखा हैं!
ऐसा किसी पापी जन के साथ ही होता है!
उसके चारों और उपद्रव उमड़ता और वह अन्धकार में गिरा दिया जाता है!
मनुष्य उसको देखते और भय में जकड़ जाते है और फिर संसार उसे भुला देता है!
क्या तुम इतना नहीं समझते?
हाँ! अभी ऐसा हो रहा है! मुझ से अपने ही घर मैं एक अजनबी के समान व्यवहार किया जा रहा हैं!
मुझ पर दया कर, बिलदद!
सोपर और एलिपज, मुझे शान्ति और दया दो!
मुझे मत त्याग, एलिहू!
ओह, अगर की मेरे वचन बने रहे, तो पुस्तकों में उनके लिए लिखें जाए जो मेरे बाद आने वाले हैं...
मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है।
जब मेरी खाल और माँसपेशियाँ, और मेरी हड्डियाँ नष्ट हो जाएँगी तब भी मैं अपने परमेश्वर को निहारूँगा!
परन्तु तुम !!!

अय्यूब 18-19:27

अय्यूब 19:28-20:29

यदी तू इसी प्रकार मुझ पर दोष लगता रहेगा तो देख मेरी आँखें आँसूओं से और मेरा चेहरा दर्द से भरता जाएगा !!
तूने कहा की दुष्ट मनुष्य जवानी में ही मर जाता हैं ! सत्य नहीं है !
धर्मी और अधर्मी, दोनों पर वर्षा होती हैं। मुझे समझ नहीं आता क्यों... सिर्फ परमेश्वर जानता है। अन्य कोई उसके तरिके को नहीं समझ सकता।
ठीक हैं, लेकिन परमेश्वर तुम्हारी धार्मिकता के लिए तो तुम्हें दण्डित नहीं कर सकता। दुष्ट मनुष्य अपने पापों को नाश हो जाने वाली आँखों से छुपा रखता हैं, परन्तु तुम परमेश्वर से छिपा कर नहीं रख सकते !
लेकिन एलिपज मैं तो परमेश्वर की ईच्छा जानने का खोजी हूँ।
जैसा तुम कहा, परमेश्वर मेरे मन को जानता हैं।
वह जानता है कि मैं केवल रोटी पर ही नहीं परन्तु उसके मुहँ से निकलने वाले हर एक वचन से जीवित रहता हूँ...
अभी, मुझे उनमें से कोई भी वचन सुनाई नहीं पड़ता...!

लोग चोरी करते हैं और नाश हो जाते हैं, निर्धन मनुष्य भूखे और नंगे होते हैं।
मनुष्य, मनुष्य की हत्या करता और स्त्री और पुरुष दोनों व्यभिचार करते हैं।
अन्धकार के लोग अन्धकार ओढ़े हुए बुरे कार्य करते हैं।
उन सब की तुलना में, मैं दुष्ट मनुष्य नहीं हूँ, भलाई से मेरी करो, वो मैं हूँ।
और यदि परमेश्वर की सामर्थ्य मुझ में होती, तो मैं इस दुष्ट को मिटा देता।
किन्तु परमेश्वर ऐसा नहीं करता। क्यों?
मुझे खुश होना चाहिए कि परमेश्वर ऐसा नहीं करता अन्यथा मैं भी मिटा डाला जाता।
अय्यूब क्या तू स्वयं की बातें सुन रहा हैं?
क्या मैंने कुछ भी असत्य कहा है?
वास्तव में नहीं। यह सत्य है की परमेश्वर सामर्थी है और पवित्र और शुद्ध है।
पर मनुष्य?
मनुष्य एक कीड़ा है, अय्यूब
तुम, अय्यूब, तुम परमेश्वर की नजर में एक कीड़ा हो...
कमाल, बिलदद!

तुम सचमुच उकसाए गए हो, मुझे बताओ आत्माओं !
मुझे बताओ कि तुमने यह बुद्धि कहाँ से पाई ?
अय्यूब, मैं तुम्हे सिर्फ यह दिखाना चाहता हूँ कि दुसरे बुद्धिमान पुरुषों से मैंने क्या सीखा हैं !
ओह। अन्य बुद्धिमान पुरुषों भी देखूँ।
पृथ्वी की सतह सागर की गहराई, आकाश का विस्तार -- परमेश्वर ने इन सबकी रचना की और यह सब कुछ उसके योग्य होने का एक संकेत हैं !
परमेश्वर ने सब कुछ छीन लिया सिवाय मेरी आत्मा की कड़वाहट के।
वह मुझसे न बोले न बोलो, परन्तु मैं उसके विरुद्ध नहीं बोलूँगा जैसे तुम बोलते हो !
मेरे मुँह से निकला हर शब्द चोट पहुँचाता हैं पर मुझे हर एक शब्द का लेखा देना हैं...
मेरे पास सिर्फ सच्चाई के लिए समय हैं।
राजा भूमि खोदकर अपने लिए वस्तुएँ निकालते, मनुष्य समृद्धि पाने के लिए हत्या करते, ईमानदार सच्चाई से अपनी जीविका अर्जित करते हैं...
वो सोना और चान्दी खोजते और भूमि खोदकर जवाहरात ढूँढते हैं।

अय्यूब 26-28:11

अय्यूब 28:12-29:6

जवान और वृद्ध मेरा सम्मान करते थे जब मैं नगर में उनके साथ बैठा करता था।
तुम सबके विपरीत मेरे मित्रों, जब मैं बोलता था तो राज कुमार और पुरनिए ध्यान से मेरी बातें सुना करते थे।
क्यों ?
क्योंकि मैं आशीषित था और मैंने अपनी आशीष उन सभी से बाँटी जिन्हें उसकी ज़रूरत थी...
दीन लोगों का मैं बचाव करता था...
शौक करने वालों को सांत्वना देता था।
मैंने लंगड़ों और अंधों की सहायता की थी।
मैं एक राजा के सामान था!
और अब... मैं अपने कुत्तों से भी गया गुजरा हूँ!

अय्यूब 29:7-30:1

अय्यूब 30:2-31:40

अय्यूब 3:11-32:22

तुम्हें परमेश्वर से शिकायत है की वह तुझे उत्तर नहीं देता और न ही इसका कारण बताता है !
लेकिन परमेश्वर बात करता है पर शायद उस तरह से नहीं जिस तरह हम उस से उम्मीद करते हैं !
एक सपने... वचन... एक स्वर्गदूत...
और अनुभव... और परम्परा... और दण्ड.... जब परमेश्वर बात करता है तो इनके द्वारा उसे समझने मैं हमारी सहायता करता है ! जब परमेश्वर दण्ड देता, तो यह उसकी ओर आने में तुम्हारी सहायता करता है !
हमारे पास जो भी है हम उससे भी बुरे के काबिल है !
परमेश्वर जो करता है वह इसलिए की वह हमें अन्धकार से उजियाले के प्रकाश की ओर ले जाता है !
एलीहू, मैं निर्दोष हूँ, और परमेश्वर मेरा इन्कार करता हैं और मुझे मौका नहीं देता कि मैं अपनी निर्बलता प्रगट करूँ और वह मेरी बात का उत्तर नहीं देता !
वह तुम्हारा इन्कार नहीं कर रहा !
यदि परमेश्वर किसी कपटी की बात नहीं सुनता तो कृपया--
--घमण्ड से बातें बोलनेवालों को वह उसको कोई प्रतिक्रिया नहीं देता --
वह अब उत्तर क्यों देगा : क्या सिर्फ इसलिए कि तुम प्रतीक्षा करते-करते थक गए हो ?

अय्यूब 33-35

परमेश्वर लोगों को यातना नहीं देता !
वह एक शिक्षक हैं और क्या शिक्षक है, क्योंकि जिस व्यवस्था की वह शिक्षा देता है वह उसकी बनायी हुई हैं !
सम्पूर्ण सृष्टि स्वयं ही उसे उत्तर देती हैं !
गर्जन और उसकी वाणी की तुलना नहीं कर सकती !
वह वर्षा और हिम को आज्ञा देता है कि कब पृथ्वी पर गिरना है !
हवा उसके श्वास की तुलना में कुछ नहीं !
और तुम यह कहते हो कि वह चुप है ?
वह यहाँ है अय्यूब ?
वह बोलता है !
मैं औरों की तुलना में एक मुर्ख हो सकता हूँ पर इतना मुर्ख नहीं कि वह बोलूँ जो तुम बोलते रहे हो।
परमेश्वर सामर्थ्य में, न्याय में, और धार्मिकता में अतिमहान है।
उसका भय मानना उचित है !
उसके आगे झुकाना अच्छा है जो प्रचण्ड तूफान को आज्ञा देता है !
हाँ...

हाँ... ऐसा ही है।

अय्यूब ?
हाँ मेरे प्रभु ?
अय्यूब...
तूने ऐसे कहा, जैसे तू सब समझता है
पर तेरे वचनों में मेरी बुद्धि की कमी है !
मैं उनकी मुर्खता का उत्तर दे रह था...
अय्यूब !!!
मैं तुझसे बोल रहा हूँ !
उनसे नहीं !
हाँ प्रभु।

अय्यूब 38:1-38:2

अब तुझसे मेरे प्रश्न हैं। और मैं चाहता हूँ कि तू इनका उत्तर दे!
जी प्रभु।
मैं... मैं... प्रयास करूँगा
जब मैंने पृथ्वी की रचना की और उसे बादलों ढापा और तारों को रोशनी के साथ गाना सिखाया --
--क्या तू वहाँ था?
क्या तू बता सकता है की यह सब किस प्रकार हुआ?
क्या तूने कभी जगत को मिट्टी से आकार दिया और उजियाले को अन्धकार से अलग किया?
क्या तू ने कभी समुद्र की गहराईयों में चहल कदमी की?
क्या तूने कभी सितारों को गतिमान किया है कि वो आकाशमण्डल में नृत्य कर सके?
अय्यूब 38:3-38:38

क्या यह तेरे हाथ में है कि तू जवान सिंहों को अहेर करना सिखा सके ?
क्या तूने कभी हरिणी को जन्म देते देखा है ?
क्या तूने अण्डे से निकले पक्षियों का रोना सुना है ?
क्या तूने घोड़े को उनका बल दिया ?
क्या तू जानता ही कि उकाब कैसे उड़ता है ?
हे अय्यूब मुझे उत्तर दे ! कैसे यह सब होता है ?
मेरे... मेरे पास इसका उत्तर नहीं।
तो इन प्रश्नों का उत्तर दे !
अयूब 38:39-40:14

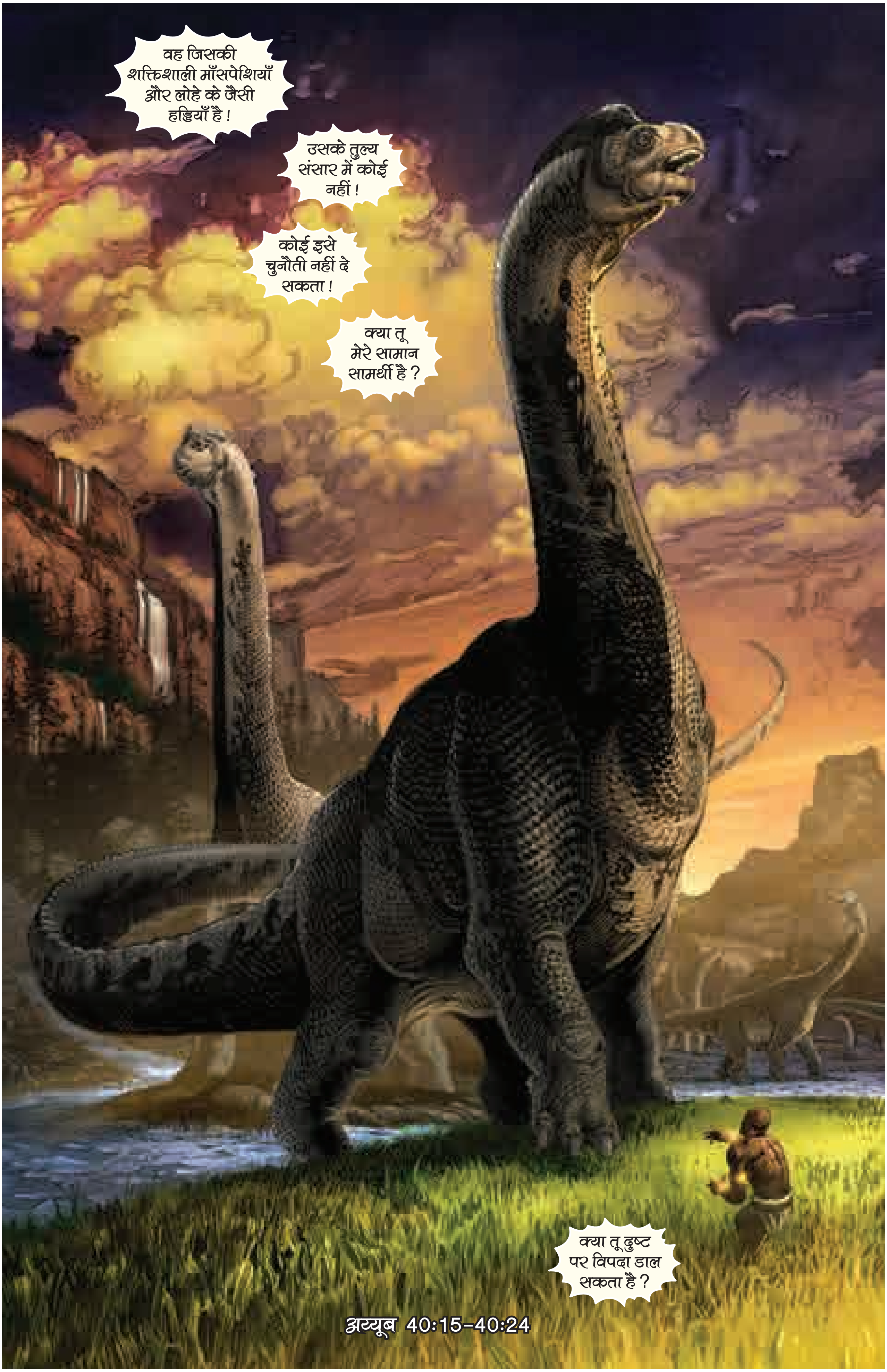
वह जिसकी शक्तिशाली माँसपेशियाँ और लोहे के जैसी हड्डियाँ है !
उसके तुल्य संसार में कोई नहीं !
कोई इसे चुनौती नहीं दे सकता !
क्या तू मेरे सामान सामर्थी है ?
क्या तू दुष्ट पर विपदा डाल सकता है ?
अय्यूब 40:15-40:24

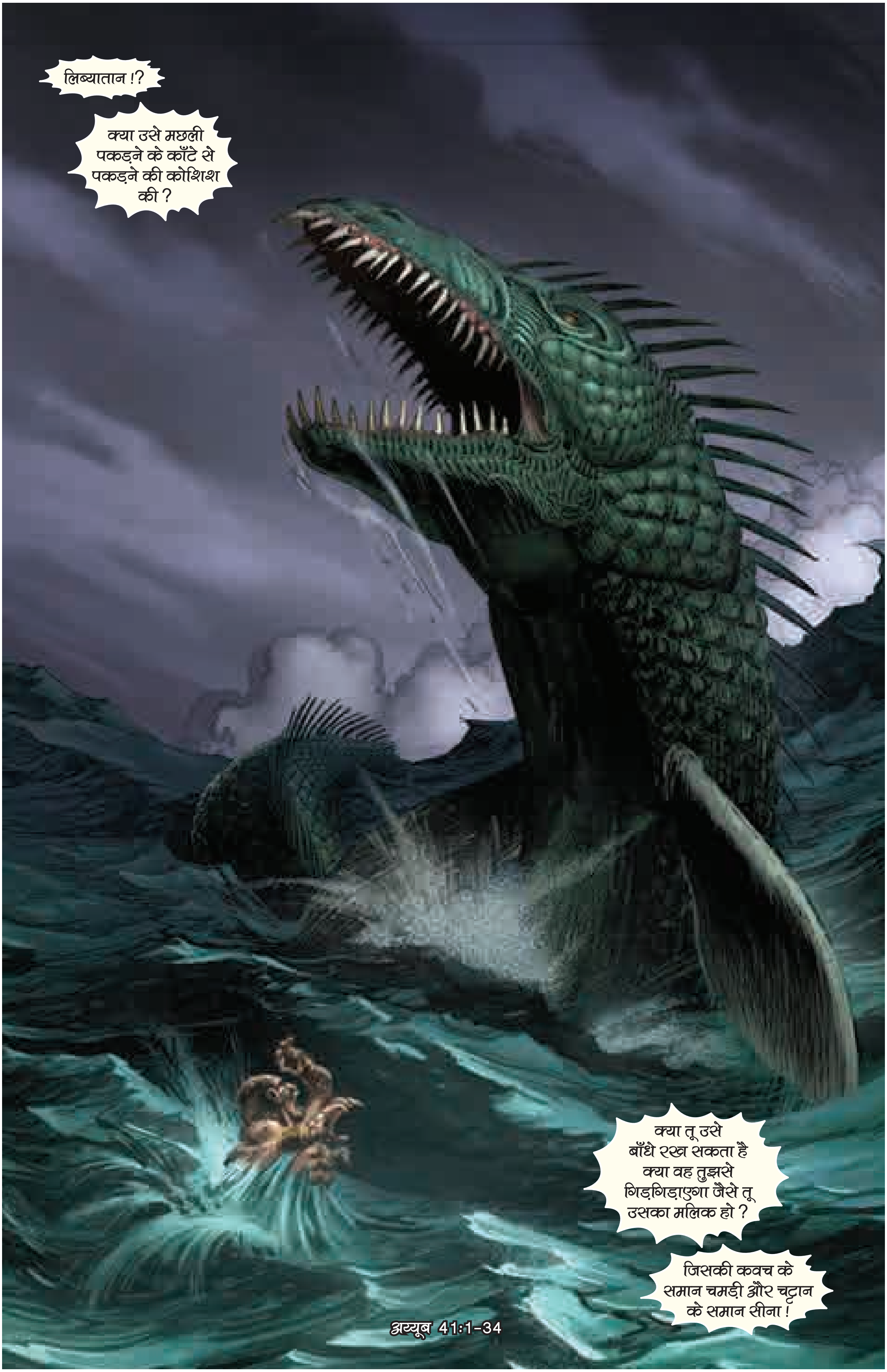
लिब्यातान !?
क्या उसे मछली पकड़ने के काँटे से पकड़ने की कोशिश की ?
क्या तू उसे बाँधे रख सकता है क्या वह तुझसे गिड़गिड़ाएगा जैसे तू उसका मलिक हो ?
जिसकी कवच के समान चमड़ी और चट्टान के समान सीना !
अय्यूब 41:1-34

मैंने उन प्राणियों को बनाया है और उनके विरुद्ध कोई नहीं खड़ा हो सकता!
कौन... तब मेरे विरोध मैं खड़ा हो सकता है?
अय्यूब, मैंने जगत की रचना की। पृथ्वी को ढाला है।
मैंने उसे छोटे और बड़े प्राणियों से भरा है
मैंने तुझे रचा है।
मुझ पर भरोसा रख।
अय्यूब 38-41

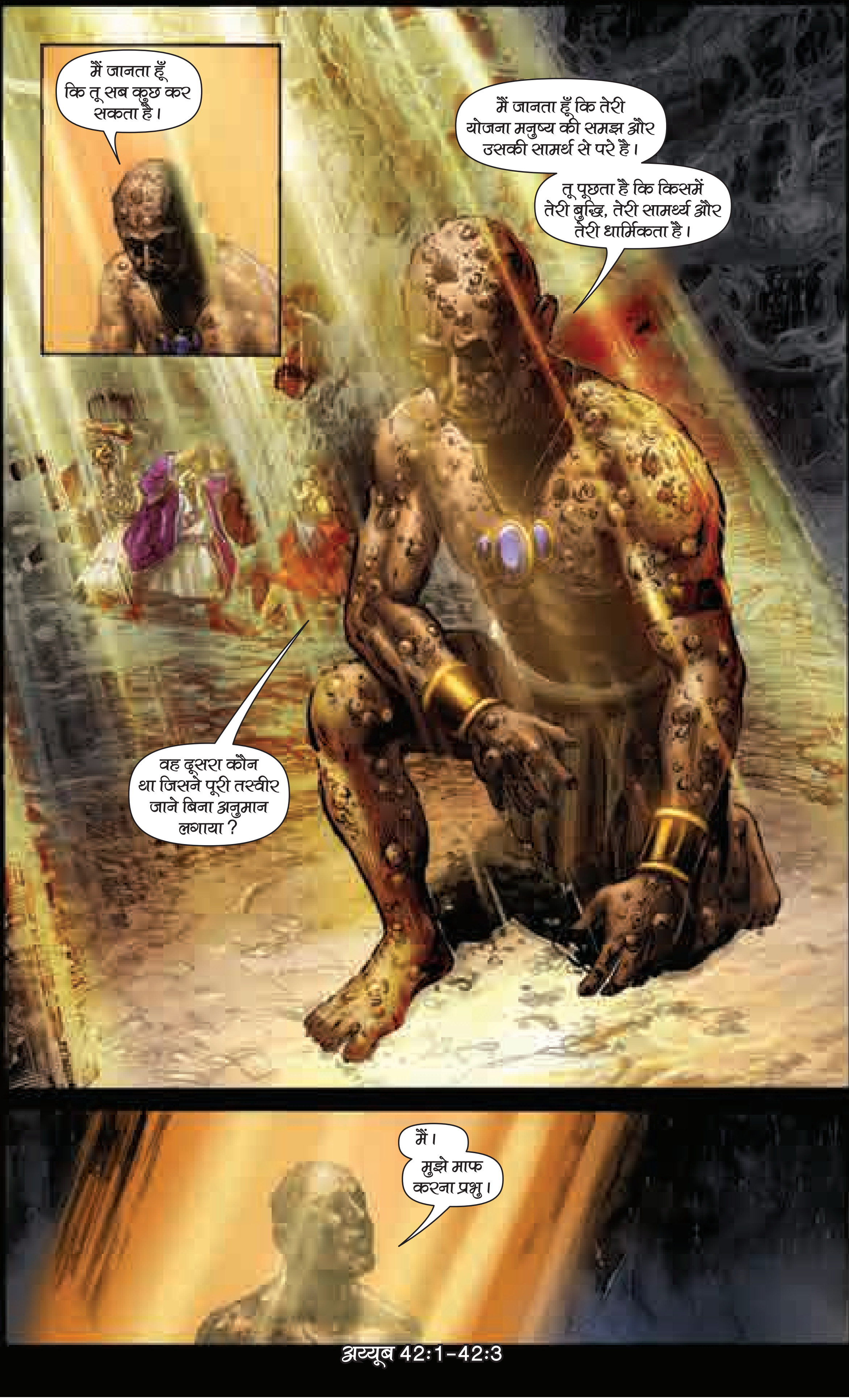

मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है।
मैं जानता हूँ कि तेरी योजना मनुष्य की समझ और उसकी सामर्थ से परे है।
तू पूछता है कि किसमें तेरी बुद्धि, तेरी सामर्थ्य और तेरी धार्मिकता है।
वह दूसरा कौन था जिसने पूरी तस्वीर जाने बिना अनुमान लगाया ?
मैं।
मुझे माफ करना प्रभु।

अय्यूब 42:1-42:3

मैं उन प्रश्नों के उत्तर नहीं जानता जिन्हें तूने पूछा है, केवल तू ही उनके उत्तर जानता है।
अभी तक, जो मैंने सुना था उसके कारण मैं तेरे भय में होकर जीता रहा।
अब मैंने तुझे अपनी आँखों से देखा है और अपने कानों से तुझे सुना हैं...
मुझे क्षमा कर!
मेरे पास तेरे जैसी बुद्धि नहीं किन्तु मुझे तेरी बुद्धि पर भरोसा है!
मेरी आँखे खुद के अन्दर ही देखा करती थीं! पर अब मेरी आँखें बाहर की और, तेरी और लगी हैं!
मैं तुझसे नाराज नहीं हूँ, अय्यूब।
तेरे मन मैं मेरे लिए मेरे विषय में प्रश्न थें, किन्तु तू कभी मेरे विरुद्ध नहीं बोला।
मैंने तुझे अपना दास कहा हैं, मैंने तुझे अपना मित्र कहा है
और जहाँ तक तुम तीनों की बात है...

अय्यूब 42:3-42:7

जबकि मैंने अय्यूब को उसकी बातों में सुधारने के लिए उससे बात की, इसलिए नहीं की वह मुझ पर क्रोधित हुआ।
यद्यपि तुमने, मुझे क्रोधित किया।
तुम लोगों ने मेरी सामर्थ्य और मेरे न्याय के विषय में बातें की, परन्तु तुमने मेरे अधिकार और कृपा की अवहेलना की!
तुम लोगों ने अय्यूब को झूठा, पाखण्डी, पापी कहा! और कहा कि मैं उसे दण्ड दे रहा हूँ!
तुम लोगो ने मेरे विषय में वैसी सही बातें नहीं कही जैसी अय्यूब ने कही।
तुम तीनों को सात बैल और सात भेड़ की होम बलि मुझे चढ़ानी होगी।
मैं तुम तीनों की ओर से सिर्फ अय्यूब की प्रार्थना ग्रहण करूँगा और न की तुम्हारी योग्यता पर।
पश्चाताप करो!

अय्यूब 42:7-42:9

यह... यह समय विलाप के पूरे होने का है।
मैं... मैं सोचता हूँ कि अब घर लौटने का समय आ गया है।
हाँ... और नहीं भी...
मैं अभी भी दुःख महसूस कर रहा हूँ, मेरा मन अभी भी अपने बच्चों के लिए दर्द से भरा हुआ हैं...
अय्यूब, तुम ठीक हो न ?
अय्यूब ?
अगर तुम वैसा करने की योजना बना रहे हो, जैसा परमेश्वर ने तुमसे कहा है, तो मैं अपने घर पर तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।

अय्यूब 42:9

आओ अय्यूब, मैं तुम्हें घर ले चलूँ
अय्यूब ?
क्या हो रहा है ?
मैं... मैं नहीं जानता
एक बात और जिसे मैं नहीं जानता... जो मैं समझ नहीं सकता !
और एक बात जिसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो !

अय्यूब के मित्रों ने वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उनसे कहा।
और अय्यूब ने भी वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उससे कहा।
प्रभु, मेरे मित्र तेरे सम्मुख इस भेंट के साथ उपस्थित हैं!
उन्होंने अपने पापों को पहचान लिया है!
ये अपने उस पाप के लिए जो उन्होंने तेरे विरुद्ध किया है, उसे चुकाने के लिए ये बलिदान लेकन आए हैं!
और परमेश्वर ने वैसा ही किया जैसा करने का उसने वचन दिया था।

अय्यूब 42:9

क्या तुम कभी समझ पाओगे कि ये सब क्यूँ हुआ ?
क्या हमें सबक सिखाने के लिए ?
हमें सबक सिखाने के लिए ?
या उनके लिए जो हमारे बाद आनेवाले हैं
यह सब और इससे अधिक... यह सब हमारी समझ से बाहर है !
उस पूरे समय तुम किसी को अपनी ओर से परमेश्वर के सामने खड़ा होने के लिए कहते रहे !
और अब जबकि हमने तुम्हें निराश कर दिया तो तुम हमारी ओर से उठ खड़े हुए।
परमेश्वर की आशीष तुम पर बनी रहे मेरे मित्र।
तुम जैसे मित्र पाकर मैं गौरवान्वित हूँ।
हमने तुमसे जैसी बातें कहीं वह सुनकर भी तुम हमसे नफरत क्यूँ नहीं करते ?
क्योंकि परमेश्वर हमसे हमारे गलत व्यवहार के बाद भी हमसे नफरत नहीं करता !
अय्यूब 42:9

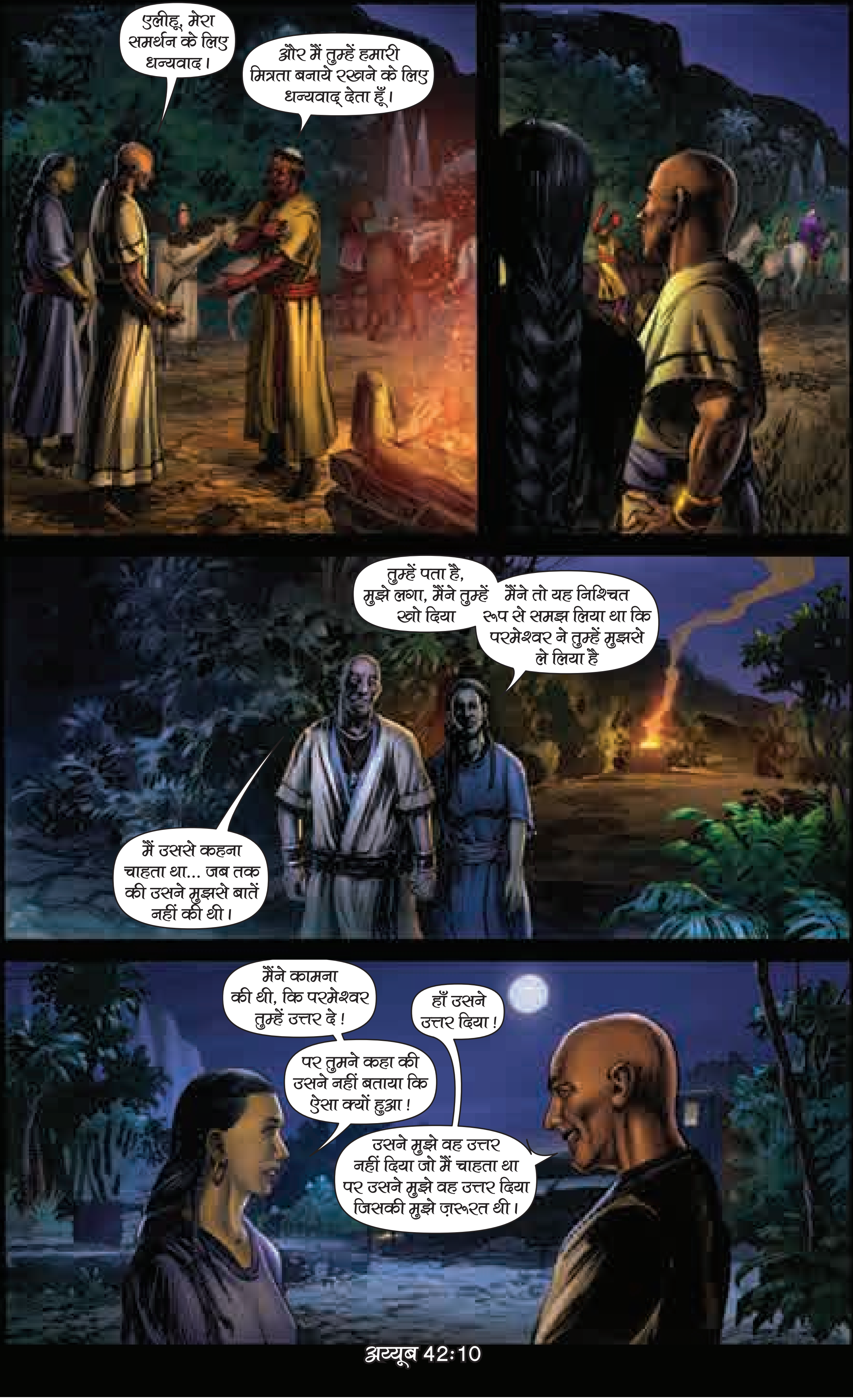
एलीहू, मेरा समर्थन के लिए धन्यवाद।
और मैं तुम्हें हमारी मित्रता बनाये रखने के लिए धन्यवाद् देता हूँ।
तुम्हें पता है, मुझे लगा, मैंने तुम्हें खो दिया
मैंने तो यह निश्चित रूप से समझ लिया था कि परमेश्वर ने तुम्हें मुझसे ले लिया है
मैं उससे कहना चाहता था... जब तक की उसने मुझसे बातें नहीं की थी।
मैंने कामना की थी, कि परमेश्वर तुम्हें उत्तर दे!
हाँ उसने उत्तर दिया!
पर तुमने कहा की उसने नहीं बताया कि ऐसा क्यों हुआ!
उसने मुझे वह उत्तर नहीं दिया जो मैं चाहता था पर उसने मुझे वह उत्तर दिया जिसकी मुझे ज़रूरत थी।

अय्यूब 42:10

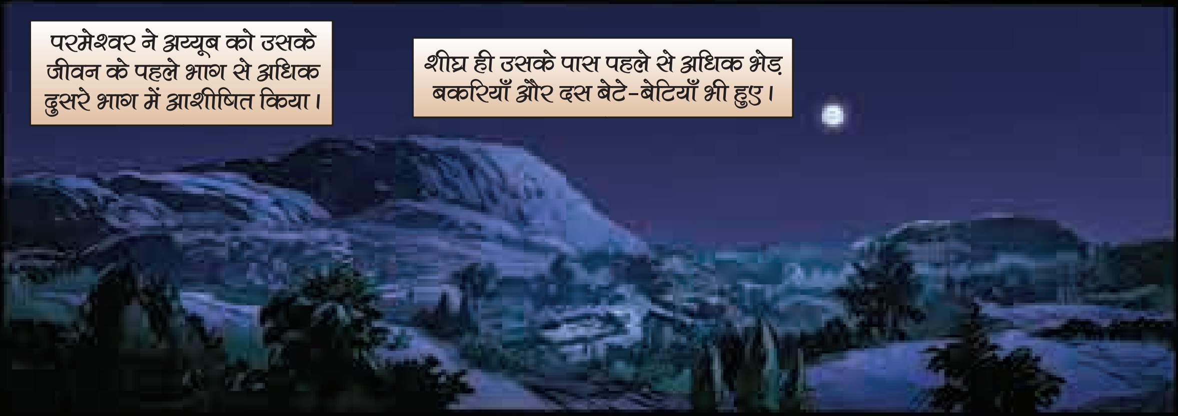

अय्यूब 42:11-42:17